श्रृङ्गारदर्पण ।

कवि नन्दराम कृत ।

जिसे

ठाकुर रघुनाथसिंह नम्बरदार मौजे थावर
थाना मलीहाबाद ज़िला लखनऊ
द्वारा
हस्तलिखित कापी को प्राप्त कर
भारतजीवन सम्पादक बाबू रामकृष्णवर्म्मा ने
निज व्यय से छापकर प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में छपा ।

सन् १८९७ ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।॥)

शृङ्गारदर्पण

दोहा ।

बन्दौं राधारमनपद कोटि कामकमनीय
गोपसुता के प्रान धन रसिक रासरमनीय ॥ १ ॥

सवैया ।

वै उनको पटपीत ओढ़ावत वै उनको चुनरी पहिरावैं ।
वै उनको मुख चूमत हैं अरु वे उनको हँसि कै उर लावैं ॥
वै उनको कच कुण्डल ते झुकि वै नथ के उरझे सुरझावैं ।
मंगलधाम यों राधिका स्याम सदा नँदराम हिये बिच भावैं ॥

दोहा ।

अन्तरजामी जगतपति जानत सकल कसूर ।
अपनी ओर निहारि प्रभु करौ मनोरथ पूर ॥ ३ ॥
कहँ मम मति कहँ तुव चरित नेति नेति श्रुति गाव ।
मूढ़ सिंधु उतरी चहत चढ़ि कागद की नाव ॥ ४ ॥
रहत न घर बन काम धन कूप तड़ाग निकाइ ।
जस-शरीर जुग जुग जियत सरस भनित सो पाइ ॥५॥
यदपि मूढ़ मैं मन्दमति हौं औगुन को कोस ।
तदपि रावरी बानि को मेरे हिये भरोस ॥ ६ ॥

समदरसी ब्रजराज तुम सब पर एक बिचार।
भिद नहीं बरनत कहूं आदर दूसर भार॥ ७॥
थिर न काल चिरकाल यह जलजमात जल न्याइ।
ताते सो उद्यम भलो जो जग बृथा न जाइ॥ ८॥
सन्तत सन्तसमाज मत निज मत भलो बिचारि।
बरनौं राधा कृष्ण जस जो दायक फल चारि॥ ९॥
छन्द भेद जानौं नहीं नहिं कविता को भाव।
करौं ग्रन्थ शृङ्गारमय छमियो कवि कविराव॥ १०॥
बिपुल कनक कविता रुचिर सुमति सोहागा ओर।
रसभूषण कैसे बनै कवि सोनार मतिभोर॥ ११॥
सम्बत मुनि दृग नन्द ससि शुचि सित दिग भृगुवार।
राधाकृष्णबिहारमय लियो ग्रन्थ औतार॥ १२॥
रसिकजनन के प्रान धन सुकविन परम पियार।
नन्दराम बिरचित करत यह दर्पनशृङ्गार॥ १३॥
आलम्बित शृङ्गाररस नौ रस को सिरताज।
ताते नीकी नायिका बरनत सब कविराज॥ १४॥
प्रथम नायिका मैं कहत नायक मति अनुसार।
कहिहौं राधा कृष्ण को रसमै बिमल बिहार॥ १५॥

अथ नायिका लक्षन—दोहा।

जाहि बिलोकत होत है मन मो मदन उद्दोत।
ताहि तरुणि को नायिका कहत कबिन के गोत॥१६॥

अथ नायिका को उदाहरन—कवित्त।

इन्दीवर नैनन पै भ्रकुटी कमान निज रूप के गुमान मान रति को पचै रहै। रूप कैसी रासि बाल सोहै मनि मन्दिर में उन्नत उरोज भार लंक को लचै रहै॥ कहै नन्दराम जब औचक उघारे मुख कंज से कपोल चित चौगुनो सचै रहै। चौंकि परैं चहकि चकोर चारीओरन ते चंचरीक चारु चमकाहट मचै रहै॥ १७॥

पुनर्य्यथा—सवैया।

सोहत है सुख मन्दिर में निरखे छबि की छतियां दरकी परै। त्यों नन्दराम जू चन्दमुखी मुखचन्द ते हास छटा छरकी परै॥ बैठती है जेहि ठौर भटू तेहि ठौर सबै सुखमा सरकी परै। चारहुंओर कुसुम्भ की धार धरा मे मनो ढर की ढरकी परै॥ १८॥

दोहा।

कामिनि कर कंजन लिये सहजहि कुसुम गुलाब।
निपट निहारेहु नयन दूजी मिलत न आब॥ १९॥

अथ नायिका भेद दोहा।

कहत नायिका तीनि बिधि सकल सो कवि सिरमौर।
स्वकिया परकीया बहुरि सामान्या पुनि औेर॥ २०॥

अथ स्वकीया लछन—दोहा।

सील सुधाई लाज तें परत लखी सी बाम।
पति तपसा को पुन्यफल सो स्वकिया अभिराम॥२१॥

यथा—कवित्त ।

बोलनि को स्वाद जानै कण्ठ को न जानै भटू डोलनि को स्वाद सास कैसे पहिचानै री । देखनि को स्वाद जानै नैन कंज कोरन की हास को बिलास ओंठ जानै की न जानै री ॥ कहैं नन्दराम पतिव्रत मैं गिरा की गौरि रूप देखि कामकामिनी को कौन तानै री । हारि हारि जैये गुण गण पै री सील सिंधु वारि वारि जैये नीके विधि के विधानै री ॥ २२ ॥

सवैया ।

चन्दमई अंग अंग प्रभा अरबिन्दमई कर कोमलई है ।
क्रन्दमई मुख माधुरी त्यौं मकरन्दमई तन सौरभई है ॥
त्यौं नंदराम सोहाग सुधामई लाजमई सुखसाजमई है ।
मोहन पै अनकूल दई जेहि शीलमई नई नारि दई है ॥

दोहा ।

हांस चांदनी चन्द मुख बचन पियूषन दाहि ।
नयन श्रवन पिय के उदधि उमगत उमगत नाहि ॥२४॥

अथ स्वकिया भेद वर्णनम्—दोहा ।

तीनि अवस्था जानिये स्वकिया के कविराज ।
मुग्धा अरु मध्या बहुरि पुनि प्रौढ़ा सुख साज ॥ २५ ॥

अथ मुग्धा लच्छन—दोहा ।

नित नित प्रति दूनी जगै जेहि जोबन की जोति ।
चन्दकला सी देह मैं तासौं मुग्धा होति ॥ २६ ॥

अथ मुग्धा की उदाहरन कवित्त।

कंचन सी गात अलजात से लजीले नैन भृकुटी कु- मान मानो मैन की मरोरो है। रंचक उरोज की उचाई त्यों ललाई अधरान की मिठाई चाह चौगुनो चभोरो है॥ कहै नन्दराम लरिकाई भरे भोरे बैन बारो बैस गोरी वृष- भान की किशोरी है। सेत रंग सारी अंग ओप ते दुरंग होति जानि परै केसरि कुसुम्भ रंग बोरी है॥ २७॥

दोहा।

लाजभरी अखियान पिय सन्मुख लखो न जात।
घर आवत हरि दुरि रहत जात निहारत गात॥२८॥

कवित्त।

ज्यों त्यों कै पियारी कों पिया के परयंक पर ल्याइ गई सखियां सो केलि के महल मैं। आइ के निहारी चांदनी सो परी सेज पर सोवत मरालबाल मानो मानसर मैं॥ कहै नन्दराम नेक अंक मैं लगावतहो चौंकि परी सावकी कुरंग कैसो घर मैं। सूत सी सुरति मैं छुरत चपला सी बाम बाम कंज कैसो पानी आनी आवत न कर मैं॥ २९॥

दोहा।

परी परी सी पलँग पर कर पकरत थहराइ।
ज्यों लज्जालू की लता छुवत जात मुरझाइ॥ ३०॥

अथ मुग्धा सुरता कवित्त।

कोने कैसी डार सुकुमार श्रमभार भरी जैसे तैसे रति

पाये वार पार पाइ कै। पीठि दै पिया को मूदि लोचन लजौले लोल कंज करि नौचे त्यौं कपोल वे लगाइ कै॥ पीढ़ि रही बाल मृगमद को तिलक भाल नन्दराम कहै कैसे उपमा बताइ कै। कंज को बिछौना करि अंग मृग छौना करि सोइ रही चन्द मानी भूतल मैं आइ कै॥३१॥

दोहा।

निधुबन संगर मुरि गई कादर सी कदराइ।
भय बस सूखे अधर मृदु श्रमजल गई अन्हाइ॥ ३२॥

अथ मुग्धा भेद बर्णन—छन्द चौबोला।

मुग्धा चारि भांति कहियति है प्रथम नवोढ़ा जानौ।
ज्ञात बहुरि अज्ञातयौबना पुनि बिस्रब्ध बखानौ॥ ३३॥

अथ नवोढ़ा को लक्षण दोहा।

जाइ लड़कपन देह ते जोबन को परबेश।
ताहि नवोढ़ा नायिका कबिबर कहत असेश॥ ३४॥

अथ नवोढ़ा को उदाहरन कबित्त।

मैन महाराज राज कीन्हौं अंग अंगन मो जीति लीन्हौं जोरि कै जमाति जोरि जंग को। छाती पर छन के निशान कुच कामिनी के कटि कीन्हौ जेर तैसी अँगिया उतंग को॥ चंचलाई पायन की दीन ह्वै मिलाप कीन्हौं नीति को बिचारि जीति नैनन के संग को। कहै नन्दराम त्यौं तगीर लरिकाई भई पाई है जगीर तरुनाई अंग अंग को॥ ३५॥

दोहा।

तमसी जीवन रवि किरिनि तम सी गई उड़ाई ।
लरिकाई कामिनि बदन रही मदनछबि छाइ ॥ ३६ ॥

अथ अज्ञातयौवना को लक्षण दोहा।

होइ जवानी प्रगट तन जो नहिं जानै बाम ।
ताहि कहत अज्ञात है नन्दराम गुणधाम ॥ ३७ ॥

अथ अज्ञात को उदाहरण—कबित्त।

काहे मेरे ओंठ आप आपही मिठान लागी काहे ते समीर लागि रोम हरखात है। काहे अँग अँगिराति अँगिया समात नाहिं छिन छिन काहे कटि छीन परी जात है॥ नन्दराम काहे ते नितम्बन में भार भयो काहे गति पायन की मन्द सो लखात है। काह करौं माई निशि नींद नेक आई नाहिं देखि के भोंड़ाई मेरो जियरा डेरात है॥ ३८ ॥

सवैया

सखि भौन के बाहेर होतहि भोर चकोर धौं काहे उड़ावते हैं। कहि त्यौं नन्दरामजू ओठन को रुख रोर कियो कह पावते हैं॥ मोहि कुंजन बीच निहारि कहा मिलिमोर धौं शोर मचावते हैं। यह कौन धौं बानि परी धौं कहा मृग संगही संग सिधावते हैं॥ ३९ ॥

दोहा।

कहां जाउं कासों कहौं उर मो व्याधि उदोत ।
देखि देखि अंकुर उरज दून दूबरी होत ॥ ४० ॥

ज्ञातयौवना को लक्षण दोहा ।

जानैं अपनो देह मैं जोवन आयो बाल ।
ज्ञातजोवना ताहि को भाषत गुणी रसाल ॥ ४१ ॥

अथ ज्ञात योवना को उदाहरण कवित्त ।

धारै लागी अंबर सुधारै लागी अभरन झारै लागी कुन्तल निहारै लागी चाल को । मोरै लागी अंगन मरोरै लागी भौंहन को तोरै लागी तिनुका बिलोकि भले भाल को ॥ कहै नन्दराम कलकंचुकी सिंगारै लागी टारै लागी घूंघट निहारै लागी साल को । मन्द मुसकान लागी चांदनी सोहान लागी हेरि हरखान लागी आनन गोपाल को ॥

दोहा ।

भौन कौन कर कामिनी करि दरपन औदात ।
हेरि हेरि निज दृगन को मनही माँझ सिहात ॥४३॥

अथ विश्रब्धनवोढ़ा को लक्षण दोहा ।

कछू प्रीति परतीति जब पीतम सों तिय चित्त ।
ताहि कहत विश्रब्ध है जुवती निपुन कवित्त ॥ ४४ ॥

अथ विश्रब्ध नवोढ़ा को उदाहरण कवित्त ।

पौढ़े लागी सखिन के संग रंग भौन जाइ अंगना अनंग कैसी सोवत जगाज सी । कहै नन्दराम काम कथा करै लागी कान बातैं करै लागी पियप्रेम मैं पगाजसी ॥ जब

तब ठाढ़ी होन लागी पानदान लै कै पीतम के पास कछू दूरि से भगाऊसी। सौहै करै लागी अलसौहैं करै लागी भाल भौंहै करै लागी नंदलाल सों लगाऊसी॥ ४५॥

दुतिया के चन्द को बिलोकन को चन्दमुखी आपुही अकेली गई कोठे पर मोद छाइ। कहै नन्दराम घनश्याम चित्त चोपि चले जीवन की मूरि आजु गोसे मैं पकरिपाइ॥ बाल बिललानी दूजे मारग न जानी हेरि हिय हरखानी हंसि हाल करी चतुराइ। सीढ़ी के डगर जौलौं लाल गयो ऊँचे पर जीना के डगर तौलौं नीचे को उतरि आइ॥४६॥

सवैया।

संग कछूक भयो निशि मैं उठि प्रातहि ते दुगुनो दुति जागी। त्यों नन्दराम गये वह बासर भौन के कोन गये हरि लागी॥ लाई लवाई सखी छल सों तिय के उर भूत निसा रति पागी। दीपक छांह में छांह परो दृग छैल को छोरि छरा फिरि भागी॥ ४७॥

दोहा।

गई भूति रति भौन हरि भरी अंक हरखाइ।
सासु पठायो लेन कछु छल कै गई छोड़ाइ॥ ४८॥

अथ मध्या को लच्छन दोहा।

लाज मदन जाके दोउ सम सरीर में होइ।
ताकों मध्या कहत हैं कबि कोविद सब कोइ॥ ४९॥

अथ मध्या को उदाहरण—कबित्त।

आतुर न ह्वजै नेक चातुर चतुर लाल जंघन बिसाल पर जंघन करे रही। नूपुर मैं जेहरो मैं नेकहू न लागै पाउं मेरे जू कपोल पै कपोल को धरे रही॥ कंचुकी न छोरौ अंग नेकहू न मोरौ कहै नन्दराम कर को उरोज पै करे रही। जौलो घर जागती हैं ननद जेठानी तौलों मेरी कही मानो चुपचापही परे रही॥ ५०॥

मध्या भेद वर्णन दोहा।

मध्याहू के जानिये चारि भेद नँदराम।
करिहौं उदित उदाहरन कहत चारि के नाम॥ ५१॥
कहत अरुढ़ा योबना बचन प्रगल्भा बाम।
प्रादुरभूत मनोभवा सुरतिबिचित्रा नाम॥ ५२॥

अथ आरूढ़यौवना मध्या लक्षण दोहा।

मध्या रूढ़ायोबना लाज मदन सरसात।
जेहि तेहि भांति निहारई पति को आवत जात॥५३॥

अथ आरूढ़यौवना मध्या उदाहरण कबित्त।

छांटेम की छांटी छर हरी छमा छीन कटि लाजभरी नैनन निहारे जलजात को। सरसरी सारी को पसन्द करे नन्दराम घनश्याम आनन बिलोकिवे की घात को॥ रजनी सरोज से रहत सजनी के दृग बासर कुमुद मुद हेरे ना हिरात को। घूंघुट ना टारि सकै नीके ना निहारि सकै हेरि कै निहारि सकै पीतम के गात को॥ ५४॥

अथ बचन प्रगल्भा को लक्षण दोहा।

बचन प्रगल्भा नायिका बचन करै रसरंग ।
तिहि तासों रति कहत है लाज न छोड़त संग ॥५५॥

अथ बचन प्रगल्भा मध्या को उदाहरण सवैया।

आनंद सों मनमोहनै मोहनी केलि करै रति की रति वारी। प्यारी न खोलत नैन तऊ नंदराम कहैं अचरा उत टारी॥ बोलि सकोच सों ओट कियो मुख नेक तौ लाज लला उर धारी। राखे रहो कर कंचुकी पै पिय पाइ परौं अँगिया न उघारी॥ ५६॥

अथ सुरतिबिचित्रा को लक्षन दोहा।

सुरति बिचित्रा रति करै हित सो लाज लजाइ।
अंग अंग रचना बिबिधि मध्या कहि कबिराइ॥५७॥

अथ सुरतिबिचित्र मध्या को उदाहरण कबित्त।

अंग अंग भूषण अदूषण बिराजमान कंचुकी जराउ जरी उर उलही परै। पाटी करवट लैकै शीसा के महल बाल लाल को निहारै नीके रुचि ना कही परै॥ नंदराम सौंहै करै प्यारी सो न रह्यो परै अधखुले नैन करै लाजन बही परै। लोचन उघारै पिय आनन लखो न जात मूंदे पर देखिबे कि हानि ना सही परै॥ ५८॥

सवैया।

रति भौन में भामिनि भावते के परयंक पै पाउँ धरैवो

करै। अति लाज भरी अखियां पिय की अखियान में नाचि
…बो करै॥ ढिग जैबो करै हटि ऐबो करै मुरि जैबो करै
गिरिजैबो करै। नंदराम न धीर धरैबो करै भिरि जैबो करै
ललचैबो करै॥ ५९॥

अथ प्रादुरभूत मनोभवा को लक्षण दोहा।

प्रादुरभूत मनोभवा बाम रूप गुणधाम।
लाज मयन अभरन भरी क्यौं बरनै नँदराम॥ ६०॥

अथ प्रादुरभूत मनोभवा को उदाहरण कवित्त।

आनन निहारै को निहारै मुसुकानि मन्द मन्द नन्दराम
चन्द चांदनी निहारिका। छहर छहर होति छाती पर मो
तीमाल फहर फहर होति सिर सारी सारिका॥ लहर ल-
हर होति घांघरो लचकिदार दहर दहर होति माथे की
किनारिका। बहर बहर होति लाज भरे नैन बैन हहर
हहर होति हेरि काम नारिका॥ ६१॥

अथ प्रौढ़ा लक्षण दोहा।

प्रीति रीति बिपरीति की कृपा कुशल जो बाम।
अति प्रबीन रति की कला सो प्रौढ़ा अभिराम॥६२॥

अथ प्रौढ़ा को उदाहरण दोहा।

चतुर भेद प्रौढ़ा कहै चतुर लोग गुणधाम।
भिन्न भिन्न तिनके कहौं नाम निदान बखानि॥ ६३॥

प्रथम सकल रसकोबिदा चित्र बिभ्रमा बाम।
अक्रामित प्रौढ़ा तथा लज्जा प्रारति नाम ॥ ६४ ॥

अथ समस्त रसकोबिदा प्रौढ़ा को लक्षण
दोहा।

सो समस्त रसकोबिदा कुसल सुरति विधिजौन।
भावै पीतम को नहीं नेक भवन ते गौन ॥ ६५ ॥

अथ समस्त रसकोबिदा प्रौढ़ा को उदाहरण कबित्त।

गाढ़े अंक अंक मैं भरत परयंक पर दंपति निसंक संक नेक ना धरत है। फारि डारै कंचुकी उतारि डारै अंबर को नन्दराम रति रति मार निदरत है॥ चूमत अधर अधरात पछरात जात जात ना पियास पिय घातन करत है। टूटि टूटि हारन ते छूटि छूटि बारन ते फूटि फूटि मुकुता हजारन परत है ॥ ६६ ॥

चन्द्रमा सों आनन है भृकुटी सरासन सी दीठि बिष बानी में पियूष बरसत है। कँबु ऐसो कंठ त्यों रमा सी प्रति बिंब जाको कुंभ से उरोज गजराज निसरत है॥ कहै नन्दराम त्यों नितम्ब मन्दराचल से वासुकी सी बेनी हारि हाथ न धरत है। मानो वै रतन काम काढ़ सेज सागर ते और काढ़िबे के काज मंथन करत है॥ ६७ ॥

राधा राधारौन भौन रति बिपरीति रची चातुरी चतुर चित चौगुनी करत है। उरपै उरोज त्यों अधर अधरान

पर पियत पियूष अधर रसै बिसरत है ॥ नन्दराम प्यारे जैसे प्यारी को भरत अंक तैसे प्यारी भुज लतिकान अकरत है। टूटि परी परी मानों अंबर तें मोहन पै लैकै उड़ि जैबे काज अंक में भरत है ॥ ६८ ॥

अथ विचित्र विभ्रमाप्रौढ़ा को लक्षण दोहा ।

चित्र विभ्रमा नायिका प्रौढ़ा परम प्रवीन ।
अंग अंग छवि सों भरी तरुनाई रसलीन ॥ ६९ ॥

चित्र विभ्रमा प्रौढ़ा को उदाहरण कवित्त ।

शोभा को निदान जैसो विधि विरचो न आन भृकुटी कमान सान बान जाने जात है। आनन मयंक लंक लागत कलंक जैसे बूटेदार कंचुकी में कुच ना समात है ॥ कुंतल कलित कलपद्रुम के फूलन सों अधर बिलोकि बिंब विद्रुम लजात है। नन्दराम छन्द मन्द देखत गयन्द कुल भाल को हलाइ मद छोड़ि कै चिलात है ॥ ७० ॥

अथ अक्रामित प्रौढ़ा को लक्षण दोहा ।

अक्रामित प्रौढ़ा सोई भाषत कवि गुणवान ।
मनभावन भावन भलो जानत राग विधान ॥ ७१ ॥

अथ उदाहरण कवित्त ।

सुंदर अगार में सिंगार सजि बैठी बह्न प्यारे पास नई राग गई छवि छावती । सरि गम पधनी निधप मगरिस गाइ लोम औ बिलोम सातौ स्वरन सुनावती ॥ कहै नन्द

राम जेते राग रागिनीन मन तार की मिजाब कै सितार मैं बजावती। गावती मलार मद बन्द कैके बार बाल सावन की राति मनभावनै रिझावती ॥ ७२ ॥

अथ लज्जा प्रारतिप्रौढ़ा को लक्षण दोहा।

लज्जा प्रारति प्रौढ़ तिय रति मैं करत सकोच।
कहि न सकत मुख ते कछू पिय बिछुरत अतिशोच ॥

अथ उदाहरण सवैया।

बैठि प्रयंक सकोचि सों लालन केलि करी अपनी मन मानी। आसन सासन चुंबन हाँसन भोग बिलासन रैनि सेरानी ॥ त्यों नन्दराम बिहागन की धुनि कान परी अपरी अकुलानी। सासु के त्रास से बेगि उठी टेहरी लों गई फिरि सेज समानी ॥ ७४ ॥

अथ धीरादि भेद बर्ननम् दोहा।

मध्या प्रौढ़ा होत जब मानयुक्त नंदराम।
धीरा प्रथम अधीर पुनि धीराधीरा बाम ॥ ७५ ॥

मध्या धीरा को लक्षण दोहा।

कोप जनावै कन्त सों व्यंग बचन कहि बाम।
मध्या धीरा नायिका ताहि कहत नन्दराम ॥ ७६ ॥

अथ मध्या धीरा को उदाहरण कवित्त।

कौने मृगया में रहे जागत सकल रैनि बैन अलसौहैं नैन लाले करि लाये हौ। कहै नन्दराम ऐसो कौन है

कटीली बन जाकी झोर झार छत छाती मैं कराये हौ॥ कौन है शिकार गहि गाढ़े गर सौं लगाइ टूटि गई माल भाल लोहू-से लगाये हौ। कारे कारे कारतूस काटे कौन दांतन सौं लाल लाल होंठ कारे कारे करिलाये हौ॥७७॥

अथ मध्याऽधीरा को लक्षण दोहा।

मध्या ऽधीरा नायिका वह जानौ गुणधाम।
रुख बचन पिय सौं कहै करत अनादर बाम॥ ७८॥

अथ मध्याऽधीरा को उदाहरण सवैया।

जारत हौ हमरी छतियाँ किन जारत हौ जिनकी र· तियां रत। आरन ह्वै रहि हैं हम आपही त्यौं नन्दराम कहा उपचारत॥ चारत हौ ठगतेई लला नित सौतिन कें अरबन्द सुधारत। धारत लाज नहीं उर में तुम ही से लला भरे भौन उजारत॥ ७९॥

अथ मध्या धीराधीरा को लक्षण दोहा।

आवत मैं आदर करै कोप जनावै रोइ।
मध्या धीरा धोर तिय ताहि कहत कबि लोइ॥८०॥

मध्या धीराधीरा को उदाहरण कबित्त।

आवतहिं लाल के बिलोकि उठि ठाढ़ी भई कंज से क रन करि बीजना उसीर को। चोवा चारु चन्दन घनेरो घनसार घिसि घोरि आन्यो अंगराग केतो काश्मीर को॥ नन्दराम घनश्याम बैठे सजि सेज पर प्यारी को बिठाइवे

को छोर गह्यो चीर को। दुख भरे नैन रोकि रह्यो पै न रोके रहे अहक बहक तें प्रवाह बह्यो नीर को॥ ८१॥

अथ प्रौढ़ा धीरा को लच्छण दोहा।

चहि चौगुन आदर करै रति में करै अयोग।
प्रौढ़ा धीरा नायिका ताहि कहत कबि लोग॥ ८२॥

अथ प्रौढ़ा धीरा को उदाहरण सवैया।

वैसेई आदर मैं सरसी बरसी तिमि नेह के बूंदन पेखो।
त्यों नन्दराम परी परयंक पै अंक मै भावते को करि लेखो॥
औंधनो टारि उरोजन तै तन्यौ कंचुको त्यों बंदबन्द बिशेखो।
जानी पिया मन मानिनी हैं जब फूफुंदी फूंद में चौकसो देखो॥ ८३॥

अथ प्रौढ़ा धीरा को लच्छण दोहा।

अनत रमित लखि नाहँ को कहै बचन सतराइ।
प्रौढ़ाऽधीरा नायिका ताहि कहत कबिराइ॥ ८४॥

अथ प्रौढ़ाऽधीरा को उदाहरण सवैया।

बोली बिलोचन लाल कै लाल सों आजु भयो हमरो नयो भाग है। भानु उदौंन न पायो लला तुम आये कपोलन के अँगराग है॥ यों नन्दराम न खाइये सौंहन चौगुनों नैनन में अनुराग है। आइये जू सकुचाइये ना चहै जाइये जाको दगी उर दाग है॥ ८५॥

कवित्त ।

छूटि गयो धीरज निहारि मनमोहन कौं बोली बलबीर भले भेष धरि आयो हौ । माथ मूंदि लेहु जू सोहात सुनी चूनर मैं हूनर में चूक घांघरी में डारि आयो हौ ॥ घूमि करौ गौन यह भौन और भामिनि को जाहु ताके भौन जाके पग परि आये हौ । आये कितही को डारि आये कित ही को हाल जाहु तितही को जित ही को हरि आये हौ ॥ ८६ ॥

यथा सवैया ।

सतरानी कहा मृगलोचनी हौ हम जानती हैं सतरानि के यार हौ । बलि प्यारी न ऐसो कहौ हमको जनि प्यारी कहौ कहौ जाके पिया रहौ ॥ उठि खेली कछू नन्दराम पिया संग खेलिहै ते जिनके खेलवार हौ । हम सौंहै करै इत भौंहैं करी नहि सौंहै करी तुम सांचे लबार हौ ॥

अथ प्रौढ़ाधीरा को लक्षण दोहा ।

देखत मन धीरज धरै छूटत पर सतरात ।
प्रौढ़ा धीरा धीर तिय जानी मति अवदात ॥ ८८ ॥

अथ प्रौढ़ा धीरा को उदाहरण कवित्त ।

आये नन्दलाल भाल जावक बिलोकि बाल कंज से दृगन बन कन दरसन लगी । कंज मुखी कामिनी करेजे में लगाय कान्ह चूमत कपोल लाल कुच परसन लगी ॥ कहै

नन्दराम बैन ते.में कहि आयो कछू नीके नीके नैन नीर बुन्द सरसन लगी। कंचन के पीजरा ते पाले खंजरीट मानों आले आले मोतिन के माले बरसन लगी॥ ८९॥

इति धीरादि वर्णनम्।

अथ जेष्टा कनिष्टा लक्षण दोहा।

इक पति है व्याही तिया घटि बढ़ि प्यारी होइ।
जेष्ट कनिष्टा नायिका तिनहि कहत सब कोइ॥९०॥

उदाहरण कबित्त।

बैठी हैं अनंदभरी सौतैं मसनंद पर खेलैं सतरंज रंज नासक बिसाती मैं। आये नन्दराम कोटि काम छबि चोरि चित दोहुंन के बीच बैठे सेजिया सोहाती मैं॥ गरजी अलिंगन के फरजी चोराइ छीनै लागी झोप झाप को झकोर दई बाती मैं। जौलौं एक बाल बारि बाती को उदोत करै तौलौ मदमाती को लगाइ लीन्हों छाती मैं॥ ९१॥

इति श्री नन्दरामकृत शृङ्गारदर्पणे स्वकीयाभेदवर्णनो नाम प्रथम प्रकाशः।

अथ परकीया वर्णनम् दोहा।

निज पति बंचन जो करै परपति पै अनुराग।
तासों परकीया कहै कबिबर सकल सदाग॥ १॥

अथ परकीया भेद कथनम दोहा ।

प्रथम भांति है परकिया ऊढ़ाऽनूढ़ा जान ।
अनव्याही सो अनूढ़ है व्याही ऊढ़ा मानु ॥ २ ॥

अथ अनूढ़ा को लक्षण दोहा ।

बिन परिनै तिय पुरुष सौं अनुरागी जो होइ ।
ताहि अनूढ़ा कहत हैं कवि कोबिद सब कोइ ॥ ३ ॥

अथ ऽनूढ़ा को उदाहरण कबित्त ।

शिशिरि के शीत मैं अन्हाइ यमुना के नीर मूरति बनाइ धरे ध्यान बैठी गौरी मैं । माता बरदायनि हौ दीन सुख दायनि हौ गिरिजा गोसायनि हौ पग पै निछौरी मैं ॥ नन्दराम दीजै बर घर बर नन्दलाल मात पितु मत्त घूमै भाग भरी भौरी मैं । आपने स्वतन्त्र ह्वै के बोलौं मनमोहन सौं नूपुर पहिरि डोलौं नन्द जी की पौरी मैं ॥ ४ ॥

दोहा ।

मेरे सिरमौरी सुभग लालन के सिरमौर ।
भौंरी करु करुना यतन हरु कलंक को दौर ॥ ५ ॥

सवैया ।

तूती हती उनहीं ढिग मैं कहु आनंद मैं सरसातो हती धौं । कौन को टीपनो हाथ लिये लिये मेरो कहा हरखाती हुती धौं ॥ नेकहु जाति हमारे तहां नन्दराम कहा रिसि आती हती धौं । पण्डित बोलि बबा घर मैं मिलि मैया कहा बतराती हती धौं ॥ ६ ॥

दोहा।

मोसों बड़ी कि छोटि वह गोपसुता सुकुमार ।
मैया जाके व्याह के बन्दनवार दुआर ॥ ७०॥

अथ ऊढ़ा लक्षण दोहा।

व्याही तिय पर पुरुष सों जो राखत अनुराग ।
ऊढ़ा ताकों कहत हैं जे कवि सुमति अदाग ॥ ८ ॥

ऊढ़ा को उदाहरण कबित्त।

काहू सों कहैं न आली अंतर की बात हम दुख भरे द्यौस कौलौं सासुरे गुजारा करैं। सासु दृग फेरे रहै ननद न नेरे रहै टेरे रहै तापर परोसिनि पवांरा करैं॥ नन्दराम नीकेहू निहारे ते कलंक लगै देवर जेठानी नित इज्जति उतारा करैं। पावस बितीत भये नैहर को जाति रेहौं बीस बिसे मैया सबै सीस दै दै मारा करैं ॥ ९ ॥

सवैया।

सासन सासु करै कितने ढिग बैठि अवास उसाँस गना करै। त्यों नन्दराम परोसिनि पास की मन्दिर के तन ताना तना करैं॥ बैर मैं घोर जेठानी रहै हरहाल मैं हाल हजार हना करैं। कैसे निबाह परै सजनी हम काग को खूसट कौलौं बना करै ॥ १० ॥

अथ परकीया भेद बरणन छन्द चौबोला।

परकीया षट पहिलो गुप्ता फेरि लक्षिता मानो ।
बहुरि विदग्धा कुलटा मुदिता पुनि अनुसैना जानो ॥

अथ गुप्ता लक्षण दोहा ।

आवै जो संकेत सों करिके भोग बिलास
पूछे सुरति छपावई सो गुप्ता परकास ॥ १२ ॥
गुप्ता त्रिविधि बखानिये भूत और ब्रतमान ।
कहिहौं बहुरि भविष्य तिय चतुराई जुत मान ॥ १३ ॥

अथ भूत गोप्ता को उदाहरण कबित्त ।

मोहिं को पठौती नित सुरभी दुहावन को कोई मानौ राज काज इनहीं को दै गयौ । नन्दजी को बाछा मोहिं मारिबे को दौरो देखि भागौ मैं खटोले बन जान्यौ प्रान लै गयौ ॥ फाटि गयो अंग अंग भंग अंगियाहू भई टूटि गयो हार बार छूटि छोर नै गयौ । आजु ते न जैहौं कोई केतो कहै नंदराम देखु मेरे तन को हवाल कौन ह्वै गयौ ॥

दोहा ।

बांधि जात बछरा नहीं घर के निधरक लोग ।
छोरे ते भागत भभरि हरि न काम तिय जोग ॥ १५ ॥

अथ बर्तमान गुप्ता को उदाहरण सवैया ।

जैसी कही हँसि मोसों भटू तुम तैसी कहौवे तुमैं न चहा है । आई हुती यमुनाजल को लगो कंटक पायँ न होश रहा है ॥ आइ गयो दुखिया नन्दराम बिलोकत हाल हमार लहा है । बैठि कै कांट निकारे लगो सखि यामैं कही कि कलंक कहा है ॥ १६ ॥

दोहा।

गिरी हिंडोले ते हहरि माली लई उठाइ ।
राम राम कहिबो रह्यो दियो कलंक लगाइं ॥ १० ॥

अथ भविष्य को उदाहरण कवित्त।

आली एक सपनों बिलोकति हों रोज रोज तोहूं सों कहत मेरो जिय सकुचत है। गाउं की चवाइन को मंडली में धाम धाम मेरो री कलंक भरो चौचन्द मचत है॥ कहै नन्दराम याको वेगही उपाइ करो नहीं तौ हमारो ब्रज छूटिबो चहत है। बहुधा मेरो सपनो न झूंठ होत माई हाइ ताते मोहि खान पान कछू न पचत है॥ १८॥

दोहा।

करन लगी उतपात अति नंदनदन ब्रज गाउं ।
कोउ अब कहुं जाइ जनि धरै न कोउ नाउं ॥ १९ ॥

अथ लच्छिता को उदाहरण दोहा।

सखी जानि लेती सुरति ईहा अंग निहारि ।
ताहि लच्छिता जानिये कबिजन कहत बिचारि ॥२०॥

अथ उदाहरण कवित्त।

कौने या कपोलन में पीक पंक पारि दई टारि दई कौने यह बेंदी भले भाल को। फारिदई सुन्दर दुकूल कौने कूलन में झारि दये फूल कौने बनी झोल झाल को॥ कहै नन्दराम कौने मोती माल तोरि दई बोरि दई चूनर त्यों

घांघरी बिहाल की । गात गात कीनी नखघात दये आली मन आली बतलात यह रचना गोपाल की ॥ २१ ॥

दोहा ।

सुरतिचिन्ह लखि कै सखी पूछी सयन चलाइ ।
माधौ तन लखि माधवी दियो मन्द मुसुकाइ ॥२ ॥

अथ बचनबिदग्धा को उदाहरण दोहा ।

उभय बिदग्धा जानियो नन्दराम सब कोइ ।
बचनबिदग्धा दूसरो क्रियाबिदग्धा होइ ॥ २३ ॥
करै बचन में चातुरी बचन बिदग्धा जानु ।
करै क्रिया में चातुरी क्रिया विदग्धा मानु ॥ २५ ॥

अथ बचनबिदग्धा को उदाहरण कबित्त ।

जान्यो बाम धाम पिछवारे घनश्याम आये नंदराम बाम लागी चातुरी सुनावनै । देखौरी परोसिनि हवाल घरहांइन के हमको अकेलो छाड़ि आपु गई गावनै ॥ कंत गयो अंत औ दिनंत लग राह लखी पावस की रैनि अैन तेज तौ न आवनै । कैसो करौं मैय्या नेक बोले जाउ जागत लौं जैसे तैसे याम जुग यामिनि बितावनै ॥ २६ ॥

स्वयं दूती कबित्त ।

येहो बटुवाट के चलैया नेक ठाढ़े होहु हमरी गरज की अरज औन धारी जू । बैदक पढ़ैहो की नजूम को निसारत हौ कविता करत की समुद्रिक संचारी जू ॥ औखध

बतैये सासु नैन कान ते बिहीन पिय परदेश ताको आगम बिचारी जू। नींद ना परत निशि अंग अँगिरात अति नंद-राम मेरी नेक रेखा तो निहारी जू॥ ७७॥

सवैया।

श्यामै सुनाय सखी सों कहै कबलों घर मैं व्रत मौन लिये रहौं। सासु रिसान करै नँनदो अरसान करै पियमान किये रहौं॥ जाइ कै मैं दुरि रैहौं तहां नन्दराम जहां दधि दान दिये रहौं। काहू सों ना कहियो तबलों अबलों सब हेरि न हारि हिये रहौं॥ ७८॥

अथ क्रियाविदग्धा को उदाहरण कबित्त

घूमत गोपाल हते ग्वाल बाल संग लीन्हें चित्र के बिचित्र भौन देखत जगा नई। आलिन समेत हेत आपुही बिलोकन को चन्द मुखी बाम तहां ताही समै आ गई॥ कहैं नन्दराम लाल बाल को बिलोकि नेक ताकत से बौरता को तन मैं लगा लई। प्यारी चकई को चकवा के तसबीर बीच चातुरी बिचारि के लकीर कों लगा गई॥

सवैया।

बैठो हतो गुरु मंडली मैं मन मैं मन मोहन को ना बिसारत। त्यों नन्दराम जू आइ गये बनते तहँ मोरपखा सिर धारत॥ लाज ते पीठि दै बैठी बहू पति मातु की आँखि ते आँखि न टारत। सासु को नैनन की पुतरीन मैं पीतम के प्रतिबिंब निहारत॥ ९०॥

दोहा।

कंचुक करि कर मोलयो ललवा को लखि लाल।
मूंदे नैन सरोज तब प्यारी गहि बनमाल ॥ ३१ ॥

अथ कुलटा को लक्षण दोहा।

विपुल पुरुष सौं रति करै नित नित नूतन यार।
अंग अधिक रचना रचै सो कुलटा सुकुमार ॥ ३२ ॥

अथ कुलटा को उदाहरण कवित्त।

आपुही सुनार घर जाइ के जड़ाऊदार जेवर अनूप के बनावने बतावती। भीतर बोलाइ दरजी को मरजी को खास वेश लाल कंचुकी के तङ्गन तनावती ॥ कहै नन्दराम त्यों अगार छोड़ि कै सिंगार छावती बहार हार हार हेरि आवती। यारहू हजार के दुलार ते न बोध करै कुल को अटत ताते कुलटा कहावती ॥ ३३ ॥

सवैया।

आँजे रहै दृग अंजन सों तन मांजे रहै घसि धूर कपूर के। त्यों नंदराम जू बेंदी तरे करि कारी लकीर के ऊंचे सिंदूर कै ॥ छोड़ि दई कुलकानि भटू निशि चाय उनान करै जगि दूर कै। स्यामहु जो खटकावे कहूं तिय आवै कीवार कै तीर अकूर कै ॥ ३४ ॥

दोहा।

चमकावत बेंदी रुचिर रचित चटपटी चाट।
इन्तजार निज यार के ठाढ़ी गहे कपाट ॥ ३५ ॥

अथ मुदिता को लक्षण दोहा।

सुनि अभिमत की बात को अंग अंग हरषाइ ।
जाको मुदिता नाम सो भाषत कवि कविराइ ॥२६॥

अथ मुदिता को उदाहरण सवैया।

आइ धनी निज भौन के भीतर केते हवाल कहै निज जीके। आजु हौं बैसी गई केतनी खिरकी पर हाथ दये मेहंदी के॥ फूलि उठे कुच कंचुकी में नंदराम यों बात कहै दुलही के। फाटि गई अंगिया अंगरागहो टूटि गये तनि तङ्ग तनी के ॥ २७ ॥

अथ अनुसैना वर्णन दोहा।

रमन थली संकेत को ताको लख नियात ।
सोच करै सो कामिनी अनुसैना विख्यात ॥ २८ ॥

अथ अनुसैना को उदाहरण कवित्त

आगम बसन्त के निपात लख्यो कुसुम को पातन को पात सो न आवत सहेजे मैं। काटि खरिकान नि कुसुंभ स रसी कै सब सूखिगी जहान ज्ञान हैरत मजेजे मैं॥ कहै नन्दराम त्यों तमालन को तालन को ताकि ताकि रोवत न सोवत समेजे मैं। त्यागत कुठार वै बराहर के हृन्दन मैं घात होत कामिनी के कोमल करेजे मैं ॥ २९ ॥

सवैया।

कानन सों सुन्यो कानन आजु दवारि लगी सखी भाग

विचारन । धाय घटा पै गई सजनी लखि पावक जाल अमी द्रुम आरन ॥ मार ते दार अपार तजी नन्दराम कहै अंसुवा दृग ढारन । पावक पुंज प्रचण्ड अखण्ड बुझायो चहै मनौं नैन की धारन ॥ ४० ॥

दोहा ।

खेत कटे कटिजान दै क्यों अति होत उदास ।
आस पास फूलन लगी पूरक आम पलास ॥ ४१ ॥

अथ दूसरी अनुसैना को लक्षण दोहा ।

केलिथली विध्वंस महँ आगी ह्वैहै जानि ।
सोचै अनुसैना यहै कविवर करत बखानि ॥ ४२ ॥

दूसरी अनुसैना को उदाहरण कवित्त ।

जान्यो कोई काज कत काटि है निकुंज भौन सोचि सासु संग गई ताही कुंज राग ते । पाता तोरि लीन्हों पास पांसुरी पकरि गिरी आव बाव बकी जैसे तैसे आई बागते ॥ नन्दराम बाम यन्त्र मन्त्र ते जंचाइ दीन्हों ही मैं भूतराज छोड़ि देहौं तेरे भाग ते । आजु तोरै पान फूल मेरो कम्म कहै कालि जोपै द्रुम काटतै तौ कौन बाट लाग ते ॥

सवैया ।

गौने के बासर बीस रहे तब ते वह बाल परी दुखभार मैं । सूने निकेत निकुंज निहारि कै सोच भयो उतपात बिहार मैं ॥ त्यों नंदराम न खात कछू तब आली कह्यो

करते उपचार मैं। काहे को शोच करो मन मैं तुव कन्त बसो अब कूल कछार मैं ॥ ४४ ॥

अथ तीसरी अनुसैना को लक्षण दोहा।

जानै पति संकेत मैं आपु न पावै जान
शोचै अनुसैना यहै कविबर कहत बखान ॥ ४५ ॥

उदाहरण कवित्त।

एला बाल बेला कल केला कचनार नार कंज त्यों अनार मकरंदन बिछा रहै। ताल त्यों तमाल साल सरल रसाल जाल फालसे फरेंदे ते फराक फूलनार है ॥ नन्दराम सुरभी समीर जमुना के तीर कोकिला कपोत कीर कलरौ सुनार है। ह्वा रहे निकुंज हरि ह्वों न जान पावत हों आह लै उसास गिरी नैन नीर नार है ॥ ४ ॥

सवैया।

आये रसाल की मंजरी लै कर मोहन त्यों बनमाल नई करि। मैंन के डाढ़े से ठाढ़े भये सखियान के बीच लखी नव नागरि ॥ यों नन्दराम जू दूबरी ह्वै लई ऊंची उसास दृगञ्चल को भरि। भूमि परै करते खसि कंकन कंकन त्यों परे नैनन तें ढरि ॥ ४७ ॥

अथ सामन्या लक्षण दोहा।

बिन धन दीन्हें होत नहिं जासों प्रेम प्रतीति ।
तासों सामान्या कहत लखि ग्रन्थन की रीति ॥ ४८ ॥

अथ सामान्या को उदाहरण कवित्त ।

बारबधू बार बार बार में अपार छबि छावती अपार हार भार को धरत है। बार बार मुकुता हजार दुति कार गुहि गावती मलार हाव भाव को भरत है॥ कहै नन्दराम के कटाक्षन के घायन सों घायल घनेरे जन धन को हरत है। सोनेहीं के इन्तजार सोने की बजार जात सोना बिना सोना नेह नेक हू करत है॥ ४९॥

सवैया ।

धावा करै जबलौं धन धाम ते आवा करै तबलौं गनिये ते। केते गरीब भये परि फन्द में दीन ह्वै ब्रोचत हाल हिये ते॥ होत नहीं अपनी कबहूं तनहूं मनहूं धनहूं के दिये ते। त्यों नन्दराम रिझावा करै अरु गावा करै मुसुकानि किये ते॥ ५०॥

कुरसी पै कुरबार के बैठी लगो दरीब ।
धनी धका दै कै गहैं देखैं दुखी गरीब॥ ५१॥

इति श्रीनन्दरामकृतशृङ्गारदर्पणे परकीया सामान्या वर्णनो नाम द्वितीयः प्रकाशः ।

अथ चतुर्भेद वर्णनम् दोहा ।

चारि भेद पुनि और हैं तिनकों करौं बखान ।
तिनके लक्षण नाम शुभ कहिहौं सहित बिधान॥ १॥

रूपगर्विता एक है प्रेमगर्विता एक

त्रिविधि मानिनी एक है अन्यसुरतिदुखितेक ॥ २ ॥

अथ रूपगर्विता को लक्षण दोहा ।

जाको अपने रूप को अतिसै होय गुमान ।

निज मुख ते वर्णन करै रूपगर्विता जान ॥ ३ ॥

अथ रूप गर्विता को उदाहरण कवित्त ।

याही ते न जैयत तुमारे कहे कुंजबन भौरन के मारे कल पैयत न भौन मैं । दूजे आजु दासी हित हांसी हर बारन मैं घाले हैं घनेरे फूल तूल तीन गौन मैं ॥ कहै नन्दराम केते कीर यमुना के तीर दौरि परैं देखत ललाई ओठ दौन मैं । मारिहैं चकोर आली मुख मेरो चन्द जानि सांचो है कबिन की झूठी आइहौं न मैं ॥ ४ ॥

सवैया ।

कालिह हौं माला लई कर मैं परे छाला कहा अँगुरी के देखावैं । पायन मैं गड़ि जाइ हैं किंसुक कैसे पिया परयंक पै आवैं ॥ त्यौं नन्दराम जू आपनो हाल मैं रावरे से कहि सांची सुनावैं । सेजे चढ़ौं किमि कान्ह जजीर सौं जावक पाउं मैं कैसे उठावैं ॥ ५ ॥

अथ प्रेमगर्विता को लक्षण दोहा ।

अपने पति को प्रेम अति निज मुख करै बखान ।

प्रेमगर्विता बाम सो भाषत सुमति सुजान ॥ ६ ॥

अथ प्रेमगर्विता को उदाहरण कवित्त ।

छाती ते न टारत हमारी करकंज कान्ह आनन निहारैं तौ निहारि हरि हारै ना । बोलै बैन जौन तौन मेरे अनुसार आली डोलैं भौन ते न कहूं चित ते बिसारै ना ॥ नन्दराम सेज पर जैसी हौं करौंट लेत तैसी उठि बैठि अंग अंतर बिचारैं ना ॥ धारैं जौन बांह मो उसीसे तौन धरे रहैं पी रह्न के होत बीर नेकहू निसारै ना ॥ ७ ॥

सवैया ।

राका करै पलसी पलका पर हांका करै हरि बीजना नीको । छाका करैं छबि छाक मैं नैनन फांका करै तन पानिप पीको ॥ झांका करै नन्दराम त्यों घूंघट सांका करैं लखि नेक न जीको । ताका करैं मुखचन्द चकोर त्यों आंका करै मुकुता नथुनी को ॥ ८ ॥

दोहा ।

निज कर गूंधत हार हरि बार सुमन अवदात ।
जानत जावक देन को प्राननाथ ललचात ॥ ९ ॥

अथ लघुमाननी को लक्षण दोहा ।

जब नायक सों नायिका करत कबहु अभिमान ।
हेत पाय प्रगटत तहां लघु मध्यम गुरुमान ॥ १० ॥
पीतम के मुख ते कहैं आन तिया को नाम ।
सुनत मानिनी होइ लघु मान कहै गुणधाम ॥ ११ ॥

दंपति पौढ़े हते परयंक पै प्रीति करै रस सों सरसानी। आवत में कढ़ि आयो कहं अब तौ ललिता छबि मैं अधिकानी॥ त्यों नन्दराम गई सुनि सूखि सरोज से नैनन मैं इगो पानी। रोवत बाल अस्सुअन सों तकियातर लौ तरसी दरसानी॥ १२॥

अथ मध्यममान को लक्षण दोहा।

मैन मैन जोरत लखै और नारि सों नारि।
प्रगटत मध्यम मान तहं कहत कछूरिस धारि॥ १३॥

सवैया।

ठाढ़ हते कहूं मोहन मोहनी आइ तितै ललिता दरसानी। हेरि तिरीछे तिया तन माधव माधवै हेरि तिया मुसुकानी॥ यों नन्दराम जू मानिनी के उर आइगो मान लगा लगी जानी। रूठि रही दुमि देखि के नैन कछू कहि बैन बक्र सतरानी॥ १४॥

अथ गुरुमान को लक्षण दोहा।

आन बधू के श्याम तन सुरति चिह्न लखि नैन।
प्रगट करत गुरुमान तिय कहत कोप करि बैन॥१५॥

अथ गुरुमान को उदाहरण कवित्त।

लज्या को न लेश ना अंदेस देस दूषन को भौन भौन एकही निशेशन मकेसे ही। सौंहैं करि जात जात फेरि फेरि ताहीं मग आपनेइ रङ्ग मैं अखात अभके से ही॥ कहै न-

न्दराम जब आवत हमारे धाम मानी कछु जानत न बैठे हमकै से ही । भोली जनि बोली हरि बोली जाइ उनहीं सों जिनके कपोल अंगराग चमके से ही ॥ १६ ॥

अथ मानमोचन वर्णनम् दोहा ।

अनायास बतरस प्रनत साम दाम अरु भेद ।
मोचन मान विधान यह भाषत सुमति अखेद ॥१७॥

अथ अनायास को लक्षण दोहा ।

भेवस छूटै मान जहं बिन प्रयास नन्दराम ।
अनायास तासों कहत सकल सुमति गुनधाम॥ १८ ॥

अथ अनायास को उदाहरण सवैया ।

भामिनी मोहन के तन पीठि दै भौहन तानि परी पर यंक मैं । त्यों नन्दराम पिया पलटै पलटै नहि रोश भरी इन अंक मैं ॥ बिज्जु छटा छहरानि छपा घहरानि घटा घन घोर ससंक मैं । छूटिगो मान गुमान तिया लपिटाइ गई हरि पीतम अंक मैं ॥ १९ ॥

अथ बतरस को लक्षण दोहा ।

बातन त्यों परिहांस मैं मान बिमोचन होइ ।
बतरस तासों कहत है नन्दराम सब कोइ ॥ २० ॥

अथ बतरस को उदाहरण कवित्त ।

को है नैन मूंदत है मूंदत न भीमर है रूप सुधा सागर मैं मीन पकरत है । को है मेरे पीठ मैं पीठ को लगावत

है है तो कम कीर बिंबवेलि बिचरत है। कहै नंदराम कौन वेनी बन्द छोरत है मोर है भुजंगिनी को चाखिको करत है। को है मेरी कंचुकी में कंजकर मेलत है है तो गिरधारी गिरि नख पे धरत है ॥ २१ ॥

प्रनति को लक्षण दोहा।

पाइ परे छूटत जबहिं मान मानिनी केर।
तासौं प्रनति बखानहीं कविजन करत निबेर ॥२२॥

अथ प्रनति को उदाहरण सवैया।

बन मोर थके अतिघोर प्रचाइ थकी चपला करिकै चल चालो। कलकंठ थकी कल कूकन कूकि थके स्वर पंचम बोलि पिकालो ॥ नन्दराम थके हरि सौंहन सौं उपचार बिचारि थकी सब आलो। तबलौं नहिँ मानिनी मान तज्यो जबलौं नहिं पाय परे बनमालो ॥ २३ ॥

अथ साम को लक्षण दोहा।

बातन की रचनान सौं सखी छुड़ावै मान।
सोई साम उपाय है कबिवर करत बखान ॥ २४ ॥

अथ साम को उदाहरण कवित्त।

केसी मद गंजि केसिहा वै कहवावत तुमैं सो मद गंजि गज गामिनी सदा रही। मोरपच्छ धारत उतारत रहत कान्ह मोर पच्छ धारे ग्रीव भामिनी सदा रही ॥ कान्ह एक गिर धारी भये गिरिधारी तुम धारि गिरिधारे कल कामिनी

सदा रही । कहै नन्दराम आजु सेरो कह्यो मानु प्यारी घनश्याम उर बीच दामिनी सदा रही ॥ २५ ॥

दोहा ।

मान बिगत भामिनि भई सुनत सखी के बोल ।
भृकुटि बंक सूधी भई फरकि गोल कपोल ॥ २६ ॥

अथ दाम उपाव को लक्षण दोहा ।

कछु दीन्हें छूटे जबै मानिनि मान महान ।
सोई दाम उपाय है गनिका लक्षण जान ॥ २७ ॥

अथ दाम उपाय को उदाहरण सवैया ।

हरि हारी करी मनुहारि करी अरु अंक भरी कितनो मन भाये । अपने कर बीजना बोजना कै बिनती बहु हीकर जोरि सुनाये ॥ नन्दराम सी नेक निहारि तबै मुख चुंबन कै अरु पान खवाये । तबलौं न तिया बश नेकि भई जब लौं न पिया बसनी कै देखाये ॥ २८ ॥

अथ भेद उपाय को लक्षण दोहा ।

सखी भेद ज्ञात बैन कहि मान छुटावै जाइ ।
सोई भेद उपाय है कहत सकल कबिराइ ॥ २९ ।

अथ भेद उपाय को उदाहरण सवैया ।

मान करै कि रिसान करै तुम आपनी सान में साना करो जनि । तान में तानो रही उनके तुम आपनी तान में ताना करो जनि ॥ त्यों नन्दराम कहो निज ढंगन आपनो

लाल बिगाना करौ जनि । बातै सुमान की माना करौ तुम बातै अमान की माना करौ जनि ॥ ३० ॥

अथ अन्यसुरतिदुःखिता को लच्चण, दोहा ।

करि आवै जेहि कन्त सौं और भामिनी भोग ।
दुखित होइ तासौं कहत सुरतिदुक्खिता लोग ॥३१॥

अथ सुरतिदुःखिता को उदाहरण कबित्त ।

तोसौं जो सहेली ना सोहागिनि समीप रही ताकी तुम जानौ की सोहाग परिपाटी गै । लच्च ते अयुत औ अयुत ते सहस्त्र सत सत ते पचास दस पांच मते छाटी गै ॥ कहै नन्दराम क्यौं लजात नैन बैन कछू और से लखात मानौ मंत्र ते उचाटी गै । मेरे काज देखो आजु कौनी भांति डाटी गई नखन सौं फाटी गई दांतन सौं काटी गै ॥३२॥

दोहा ।

वृथा दीप हित श्रम करत सहत धूम की झार ।
मेरे घर ते लागतो तेरे घर उजियार ॥ ३३ ॥

इति श्री नंदरामकृतशृङ्गारदर्प्पणे चत्वार भेद बरनने नाम तृतीयो प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ दस नायिका निरूपणम् छन्द चौबोला ।

प्रोषितपतिका और खंडिता कलहंतरिता जानौ ।
बिप्रलब्ध उतकंठ बहूरौ बासकसज्जा मानौ ॥

स्वाधिनपतिका बाम छबीली अभिसारिका बखानी ।
प्रबसतप्रेयस्या आगमपतिका ए दश बाम बखानी ॥१॥

अथ प्रोषितपतिका को लक्षण दोहा ।

प्राननाथ परदेश में प्रान बिरह बिललात ।
प्रोषितपतिका नायिका कहत सो कबि अौदात ॥२॥

अथ मुग्धा प्रोषितपतिका को उदाहरण कबित्त ।

जादिन ते प्यारे परदेश को गवन कीन्हीं ता दिन ते प्यारी अंग छाई पियराई है । बौरी सी न बोलत न काहू सो हवाल कहै आहि कै उठत ऐसी आहि अधिकाई है ॥ सिसुकि सकोचि उठि बैठत मरू कै बाम ताम तन आई दूनो देह दुबराई है । नन्दराम कामिनी के नैनन में नीर भरो पीरभरो हियरा पिरात पीर ताई है ॥ ३ ॥

दोहा ।

अति सकोच कहि जात नहिं परत पीर उर जागि ।
चोरे ते चौगुन बढ़त ज्यों मजपुट में आगि ॥ ४ ॥

अथ मध्या प्रोषितपतिका उदाहरण, सवैया ।

घनहू घहरात घटा लखि कै मोरवा बन सोर मचावत है । नन्दराम सुनै छतियां दरकैं रतिया रतिनाथ सतावत है ॥ कहि तोसों बतावत हौं सजनी अरु और सों लाज लजावत है । अब प्रेम सखी तन कैसे रहै पति तौ पतिया न पठावत है ॥ ५ ॥

अथ प्रौढ़ा प्रोषितपतिका उदाहरण कबित्त।

सोने से सहसगुण मेरो तन पीरो भयो सेज घरिया सी घरी एक में कदन है। बिरह अनलदाह पंकज के पात भये नन्दराम जान सो दुकान सों सदन है॥ सीतल सुगंध मन्द दाहक समीर मन बाहक तजत हकनाहक कदन है। जावत हमारो मनभावन न आवत है तावत हमारो तन तावत मदन है॥ ६॥

कबित्त।

फूलि रही चाँदनी चमक चांदनी की देखि भूलि रही लता लखि बासर बिराम को। खोलि रह्यो मंद मंद आपनी प्रभा को चंद डोलिरही सीतल समीर सौरसार को॥ बोलि रहे सारिका पढ़ाये पिंजरीन चारु चहकि चहकि लेत दंपति के नाम को। नन्दराम धाम को अराम अभिराम को सो बाम धूम धाम को बिलोकै धूम धाम को॥

काहे बा बिहार को तू नाम लेत ऐरी बीर आपही सचोट चोट चातुकी अचूकै देत। काहे को पटीर पंक लावती सरीर तन तावती बिरह तन आपुही भभूकै देत॥ कहै नन्दराम क्यों उसीर पौन टारत है आपही उसास अंग अंगन में लूकै देत। टारु टारु मालती के माला मंजु मालिनि तू आपुही मयंक त्यों मरीचिन ते फूंकै देत॥ ८॥

सवैया ।

जौन भरी सह्यौ आन सो बान गये कहि मारि पिया अभिसारत । जौन सहैं कलकंठ कि कूकनि जो बिरहानल ज्वालन जारत ॥ त्यौं नन्दराम पपीहरा बोलत जौन सहै अधरात पुकारत । तौन हिये में कहा रे मनोज तू भूलि कै फूल के बानन मारत ॥ ८ ॥

दोहा ।

बिधुबदनी बिधु सौं कहत बिधु बद नीकी बात ।
अस्ताचल को जात कै उदयाचल को जात ॥ १० ॥

अथ परकीया प्रोषितपतिका को उदाहरण कबित्त ।

जौन मग ह्वै कै नन्दलाल परदेस गये तौन मग बाल पग धरिबो करत है । कुंज की लतान को निहारि सोक सागर मैं परी चलि चालि सोचि अरिबो करत है ॥ आरसी कुसुम दुति सर सी समानी उर अंबक अपार अंबु ढरिबो करत है । नन्दराम तैसेई प्रबाह तैसो रङ्ग देखि नैन नीर घाट घट भरिबो करत है ॥ ११ ॥

सवैया ।

यमुना के करारन कान्ह करार करी सो दरार से होत सही है । त्यौं नन्दराम इहां हमरे हरि पांइ परे तब जान कही है ॥ तेई लता द्रुम कुंज लखे उरदाह बढ़ै उपचार नहीं है । का कहिये इन कुंजन में वह बांह गही यह राह गही है ॥ १० ॥

दोहा।

वह बंशीबट बाट वह वह जमुना वह नीर ।

अरो बोर बलबीर बिन करत अधिक उर पीर ॥१३॥

अथ गनिका प्रोषितपतिका उदाहरण कबित्त।

आई साजि सावन बहार सब भूलति हैं मोहिं कौन अंक मैं हिंडोले में चढ़ाई है। एक ओर कान्ह एकओर हम गाइ गाइ उर उर लाइ कौन भूकन बढ़ाइ है॥ कहै नन्द राम धाम धाम सों सिंगार बाम मेरे श्याम बिन कौन आनंद मढ़ाइ है । सारी तौ कुसुंम रंगवारौ मैं रगावति हौं पिय परदेश कौन गहनो गढ़ाइ है॥ १४ ॥

सवैया।

बनि बारवधू बनितान के संग यथारुचि नाहि बिहारति है । उर हार निहारि निहारि भटू प्रिय पीतमराह निहारति है ॥ नन्दराम मनै मन शोच कछू अपने जिय जीत बिचारति है। वह नाह गयो जबतै घरते तबते तन ख्वाह सिहारति है ॥ १५ ॥

दोहा ।

कहत परी वहि देश में पीतम सहत बियोग।

कहत परी वहि देश में सुनि सरसानो सोग ॥ १६ ॥

अथ खंडिता लक्षण दोहा।

निज पीतमतन तरुनि तकि आन तरुनि तन छाय।

शोच करै सो खंडिता श्रवत नैन मग आय ॥ १७ ॥

अथ मुग्धा खंडिता को उदाहरण कवित्त ।

आये श्यामसुन्दर बेराम रजनी के धाम अपनी प्रिया के लखि आनन चितै रहो । जावक लकीर लखि लालन के भाल बाल खंजन से नैन नीर भारन बनै रहो ॥ नन्दराम पौढ़ि गई बाम सूनी सेज पर प्यारे की पिछौड़ घरी चारिक लौ कै रहो । प्यारो परयंक पै करौटै लैकै पाटीतर पोक डारिवे के ब्याज पीकदान लै रहो ॥ १८ ॥

दोहा ।

सांझहि ते सखि सीख सौं कीन्हीं कल्पित मान ।
तकिया धरी लपेटि कै तोशक में सिरहान ॥ १९ ॥

अथ मध्या खंडिता को उदाहरण कवित्त ।

आये नन्दराम प्रात प्यारी के अनूप ऐन नैन रैन देखि नैन नैनन जुरै नहीं । व्यापि गयो सौति साल अंग अंग अंगना के कोटिहू उपायन सौं नेकु निचुरै नहीं ॥ बेग सौं उसांस उठी बाल उर अंतर सौं दाह को उमाह तौन मोरि ते मुरै नहीं । चोरे रही बाम जैसे तैसे बेग बैनन को नैनन को नीर केहू भांति निचुरै नहीं ॥ २० ॥

कवित्त ।

देखि अरुनाई नैन श्याम के समाई तिमि भाल मैं ललाई श्यामताई अधरान मैं । उर में उरोज अंगराग-छाप छाती छत छैल के छबीली लखि नैन भये मान मैं ॥ नन्द

राम बैठि परयंक पै मयंकमुखी भौंहन चढ़ाइ करीं भाल मैं कमान मैं। पीर बाढ़ी अंगन सँभार बाढ़ी आतुर त्यौं नैनन मै नीर औ अधीर बढ़ो प्रान मैं ॥ २१ ॥

दोहा।

सौंह करी सौंहै नहीं भौहैं करी गोपाल ।
पाँइ परी ताकि लला जाकी बे गुनमाल ॥ २२ ॥

अथ प्रौढ़ा खंडिता को उदाहरण कवित्त।

झारी एक हाथ एक हाथ आरसी लै बाल ठाढ़ी भई लाल को बिलोकि कै अगारी तौ। बोली हँसि आदर सों आइये अनोखे लाल बैठि परयंक श्रम रैनि को निवारी तौ॥ कहै नन्दराम कहा भाल में लगायो लाल लाल लाल आजु आरसी लै जु निहारो तौ। जागि से जम्हात अरसात अंगि रात अग असि ऐसे पैन नैन नेक धोय डारी तौ ॥ २३ ॥

दोहा।

झरत फूल से बैन मृदु हँसि हँसि कहत बिखाद।
संध्या बंदन को समय कहा करत बकवाद ॥ २४ ॥

अथ परकीया खंडिता को उदाहरण कबित्त।

तुम सों लगाई प्रीति नीति को बिरोध करि काज औ अकाज ब्रजराज नाहिं चीन्हीं मैं। आपनेइ चूक तीन आपनेई हूक भई लूक सी करेजे बीच कौन काम कीन्हीं मैं॥ आपं को न दोष नंदराम है हमारो सब लोकलाज छोड़ि

तुमको जो चित्त दीन्हीं मैं। कौने को कसूर तौन कासों मैं बखान करौं सोने की कटार पाइ पेट मारि लीन्हीं मैं ॥

दोहा।

प्रेम न मान्यो मैं कहत तनी आपनी तान ।
आखिर सरबस दै हमैं फेरि परी पछितान ॥ २६ ॥

अथ मानका खंडिता को उदाहरण कवित्त ।

देखतही श्याम को तिरीछि करि बाम दृग बोलो करौ गौन पीछि मेरे भौन आवौ ना। आपकी कलाम को सलाम है अलाम राज ऐसे दगाबाज ते मिजाज मैं मिलावौ ना ॥ नन्दराम आजु ते न आइयो हमारे धाम काम को न दाम झूठे बैन यौं सुनावौ ना। खूबक है कौनकार बूबू कही लाख बार लाखहू के दीन्हे आंखि आंखि मैं मिलावौ ना ॥ २७ ॥

दोहा।

आयो अनत बिहार करि बारबधू को नाहु ।
तोरि लई मनिमाल उठि कह्यो बहुरि उत जाहु ॥

अथ कलहंतरिता को लच्चण दोहा।

पांइ परेहू ना करै पीतम सो रस जोइ ।
गये अधिक पछितात उर कलहंतरिता सोइ ॥ २८ ॥

अथ मुग्धा कलहंतरिता को उदाहरण कवित्त ।

आये मेरे धाम घनश्याम इत ठाढ़े भये देखि पट तानि पौढ़ी रही मैं खोटीली मैं। गौने के बिचारि दिन चारि ना

बितीत भये नीकी भांति अंतर को बातहू न खोली मैं॥ नन्दराम नाहं बाँह गहिकै डोलाइ रह्यो पाहन की पूतरी सो पानि से न डोली मैं। डोली ते उतारि नीके पाँव मैं न दीन्हीं भूमि आली के सिखाये हाइ कन्त सों न बोली मैं॥

अथ मध्या कलहंतरिता को उदाहरण कबित्त।

आयो मनभावन मनावन को पावन पै ताज धरि हाथ जोरि ठाढ़ भो अगारो री। नन्दराम पाँइ परि हा हा करि सौहैं भरि लाज कोप सानो नेक ओर ना निहारो री॥ आपनेई हाथ हम आपने करेजे आह मारि लीन्हो बान ताहि कोज तौ निकारो री। मीन ऐसी दीन हरि बारि ते बिहीन भई पीर कोई बीर नीर लैकै तीन डारो री॥

दोहा।

सारी निशि पावन परे प्रात गये अकुलाइ।
कसक वहै कस बोलिहौं फिरि हरि सों मुसकाइ॥

अथ प्रौढ़ा कलहंतरिता को उदाहरण कबित्त।

होती जो पखान की हमारी यह छाती बीर टूटि जाती तेरे बैन बज्रक बिघात मैं। लोहे की जो होती चुभि जाती चुंब चुंबक मैं मानभरी होती छूटि जाती सौंह खान मैं॥ काठ की जो होती जरि जाती बिरहानल मैं कहै नन्दराम आह दाह सरसात मैं। हाइ प्राननाथ हाथ जोरि पाँइ माथ धर्यो मै न मान्यो तब अब काह पछितात मैं॥२४॥

दोहा।

मेरे सखि पायन परे परे रहे हरि हाइ ।

पाहन सौं मेरो हियो लियो न कंठ लगाइ ॥ ३५ ॥

अथ परकीया कलहंतरिता को उदाहरण कबित्त ।

जाके हित लागि मैं प्रकाश ब्रजमण्डल में हांसहू औ त्रास नेक चित्त में चुभायो ना। जाके हित लागि मैं पिया ते प्रतिकूल भई सूल भई ताके तन आंखि में उठायो ना। जाके हित लागि नन्दराम मैं न जान्यो काम नाम औ कु-नाम कुलकानि को गनायो ना। जाके हित लागि कै प-रोसिन के पाँइ परी तौन पांइ परो मैं हिये में सो लगायो ना ॥ ३६ ॥

दोहा।

मोंसी निठुरि गवाँरि सों करी प्रीति ब्रजनाथ।

तेऊ पर पायन परे मै न गहो हँसि हाथ ॥ ३७ ॥

अथ गणिका कलहंतरिता को उदाहरण कबित्त ।

एरी नंदलाल चित चाह मेरी बांह गही देनहार नाह के मनोरथ न चीन्हे मैं । बाँधि उरमाल हाथ दीन से अ-धीन ह्वैकै कौन कौन सौंहैं दया नाहीं सौंह दीन्हे मैं ॥ तोरि डारो हाइ मैं सनेह नंदनदन सौं नन्दराम श्याम के न एकौ काम कीन्हे मैं। चूक को अचूक चोट भूलि है न ऐरी बीर आवतही संपदा कपाट फेरि लीन्हे मैं ॥ ३८ ॥

दोहा।

रिस कीन्ही सोज करत बनी न मोसों हाइ।
पग परते कंचनमुकुट कर गहि दियो चलाय ॥३८॥

अथ बिप्रलब्धा को लच्छणम् दोहा।

मिलै न पति संकेत में बिकल होइ जो बाम।
नारि बिप्रलब्धा सोई भाखत कबि नँदराम ॥

अथ मुग्धा बिप्रलब्धा को उदाहरण सवैया।

संग सखीन के नील बधू अनुरागभरी पतिभौन सिधारी। खेलन के मिस आनंद सों नंदराम तहां न मिले बनवारी ॥ ऊँची उसास लै बैठि गई दृग मूंदि बड़ उर में दुखभारी। आलिन रंज छपावन के हित कंजमुखी सतरंज पसारी ॥ ४१ ॥

दोहा।

गई चकोरी सी चहकि फुलवारी गतिमन्द।
भये शूल से फूल तहँ बिन पाये ब्रजचन्द ॥ ४२ ॥

अथ मध्या बिप्रलब्धा को उदाहरण सवैया।

लाज मनोभव भार भरी सी गई पतिभौन मनोरथ बाढ़ी। त्यौं न मिले नन्दराम तहां मनमोहन पीर उठी उर गाढ़ी ॥ पीरी परी मुखमंडल में तन छीन भई मकरध्वज डाढ़ी। सूरतिवंत बिसूरति ह्वै वह सूरति कंत बिसूरति ठाढ़ी ॥ ४३ ॥